अध्याय-15

वानिकी विस्तार

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् की विस्तार सेवाओं के उपयोगकर्ताओं में राज्य वन विभाग, वन निगम, वन उद्योग, किसान गैर सरकारी संगठन तथा अन्य एजेन्सियां शामिल हैं। वानिकी विस्तार के अन्तर्गत कार्यकलापों का ध्येय सामुदायिक भूमि के संरक्षण, विकास और प्रबन्धन सार्वजनिक वन के संरक्षण वनों पर दबाव कम करने के लिए वन उत्पादकता बढ़ाने और वन उत्पादों के वैज्ञानिक उपयोग पर लोगों को प्रेरित और शिक्षित करना है। विस्तार निदेशालय की तीन शाखाएं है।

मीडिया शाखा पेपर और इलेक्ट्रानिक मीडिया और प्रदर्शनों द्वारा पहचान किये गए उपयोगकर्ताओं में प्रौद्योगिकियों का विस्तार करती है।

राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र तथा संस्थान पुस्तकालय वानिकी और संबंधित विषयों में पुस्तके और जरनल उपलब्ध कराते है। हाल में इन्हें आधुनिक और अद्यतन, उपभोक्ता अनुकूल तथा नेटवर्क द्वारा अन्य पुस्तकालयों को जोड़ने पर जोर दिया गया है। वर्ष के दौरान बड़ी संख्या में पुस्तकों की खरीद करके विभिन्न पुस्तकालयों में संग्रह को समृद्ध किया गया है।

तीसरी शाखा प्रकाशन ,है, जो मोनोग्राफ, ब्राशुअर्स, पेम्पलेटों और पुस्तकों सहित सभी अनुसंधान परिणामों और रिपोर्टों को प्रकाशित करने के लिए उत्तरदायी है।

विस्तार के लिए पहचान की गई तथा प्राथमिकीकृत प्रौद्योगिकियां :

वर्तमान में उपलब्ध वानिकी ज्ञान और उपयोगकर्ता समूहों में इसके प्रसार के बीच व्यापक अन्तराल है। विस्तार के लिए एक उपयुक्त क्रिया पद्धति और प्रौद्योगिकी के हस्तान्तरण के विकास इस अन्तराल को कम कर सकते है। हाल के वर्षा में, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद ने 40 परीक्षित प्रौद्योगिकियों की पहचान की है जिसमें से 17 प्रौद्योगिकियों को विस्तार के लिए ग्राहकों की मांग के आधार पर प्राथमिकीकृत किया गया।

विस्तार की कार्यपद्धति :

अन्त्य उपयोगकर्ताओं में अनुसंधान परिणामों के प्रसार के लिए कई विस्तार विधियां वर्तमान में अपनाई जा रही हैं। कार्यपद्धति की पसन्द प्रौद्योगिकी के उद्यमियों और ग्राहक समूहों पर निर्भर करती है। महत्वपूर्ण विधियां निम्न हैं :-

(1) क्षेत्र में प्रदर्शन।

(2) फिल्में, वीडियों, ब्राशुअर्स और पुस्तिकाएं जैसी विस्तार सामग्रियां तैयार करना और इनकी प्रदर्शनी लगाना।

(3) कार्यशाला, सेमिनार और सम्मेलन।

(4) व्यक्तिगत सम्पर्क।

विस्तार सहायता निधि :

विश्व बैंक अनुसंधान शिक्षा और विस्तार का एक संघटक है, जो अनुसंधान/विस्तार सहानुबंध के सुधार के लिए सहायता उपलब्ध कराते हैं। विस्तार निदेशालय द्वारा 17.2 मिलियन के तेइस विस्तार प्रस्तावों को मंजूरी दी गई ताकि राज्य वन विभागों, उद्योगों, गैर सरकारी संगठनों और अन्य अनुसंधान संगठनों द्वारा क्षेत्र में विभिन्न प्रौद्योगिकीयों का प्रदर्शन किया जा सके तथा नियमित रूप से इनका मानीटरन किया जा रहा है। भीमताल के एस.आई.आर.डी.ओ.; बी.आई.एस.आर.ए., रांची, केरल; ख्यातिप्राप्त गैर सरकारी संगठनों, यवतमाल; तमिलनाडु वन विभाग, कर्नाटक वन विभाग, पंजाब वन विभाग साथ ही गढ़वाल मंडल विकास निगम लिमिटेड जैसे-ख्याति-प्राप्त और संगठित अनुसंधान सस्थानों को सैटेलाइट प्रौद्योगिकी प्रदर्शन विस्तार केन्द्रों के विकास के लिए वित्तीय सहायता दी गई।

सेमिनारों/कार्यशालाओं और सम्मेलनों द्वारा विभिन्न स्थलों में औद्योगिक प्रौद्योगिक प्रदर्शन :

1998-99 के दौरान, भा०वा०अ० एवं शि०प० और इसके संस्थानों द्वारा निम्न प्रदर्शनों, सेमिनारों, सम्मेलनों और कार्यशालाओं का आयोजन किया गया :

1. 10-11 फरवरी, 1999 को चेन्नई में ''वानिकी, वन उत्पाद और तटवर्ती आबादी'' पर कार्यशाला।
2. 18 जनवरी, 99 को काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर में संस्थान-स्तरीय चन्दन कार्यशाला।
3. 21 नवम्बर, 1998 को नारसीपट्टनम में पोर्टेबल आसवन इकाई का प्रदर्शन और काष्ठ उपयोजन।
4. 10 फरवरी, 1999 को कोवालम, चेन्नई में उपचारित कैटामरैनों का प्रदर्शन और वितरण।
5. 9-10 अक्टूबर, 1998 को वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में जैवविविधता संरक्षण चुनौतियां और सुअवसर पर राष्ट्रीय सेमिनार।

6. 30-31 अक्टूबर, 1998 को भारत में वन उत्पादों के विपणन पर विश्व बैंक प्रायोजित राष्ट्रीय कार्यशाला।

7. 23-26 नवम्बर, 1998 को भूकंप प्रवण क्षेत्रों में अभियात्रिंकीकृत बांस आवास पर आइ०एन०बी०ए०आर० प्रायोजित अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला।

8. 21 मार्च, 1999 को व०अ०सं० में वानिकी पर प्रदर्शनी एवं जागरूकता कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

9. वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर द्वारा आन्ध्र प्रदेश वन विकास निगम के लिए क्लोनीय प्रौद्योगिक परामर्श पूरा किया गया।

10. भा०वा०अ० एवं शि०प० के सभी संस्थानों द्वारा महिला मंडल, युवा क्लब और किसानों को पौधशाला तकनीकों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम दिया गया।

11. वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर द्वारा कैज्वारिना के लिए क्लोनीय उद्यानों से बीज की सर्वोच्चता दर्शाने के लिए प्रदर्शन भूखण्डों की स्थापना पूरी की गई।

प्रदर्शनी :

वर्ष के दौरान निम्न प्रदर्शनी लगाई गई :

1. 28-29 जनवरी, 1999 को बंगलौर में काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के लिए अनुसंधान प्राथमिकताएं निर्धारण पर कार्यशाला के दौरान काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के कार्यकलापों की प्रदर्शनी।

2. 10-11 जनवरी, 1999 को चेन्नई में सम्पन्न वानिकी, वन उत्पाद और तटवर्ती आबादी पर कार्यशाला के दौरान काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के कार्यकलापों पर प्रदर्शनी।

3. विशाखापट्टनम में काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान की समुद्री प्रयोगशाला के उद्घाटन अवसर पर काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के कार्यकलापों पर प्रदर्शनी।

4. वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में 21 मार्च, 1999 को विश्व वानिकी दिवस उत्सव में प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन।

विस्तार सामग्री का निमार्ण :

फिल्म :

नयी विकसित प्रौद्योगिकीयों के उपयोग और महत्व को प्रचारित करने के लिए फिल्म एक सशक्त माध्यम है। वर्ष के दौरान मीडिया प्रभाग ने निम्न फिल्में तैयार की :

1. बैम्बू- ए गिफ्ट ऑफ नेचर (हिन्दी व अंग्रेजी) 17 मिनट अवधि

2. बैम्बू- प्रोमिशिंग गेन्स- खण्ड-I (हिन्दी व अंग्रेजी) 25 मिनट अवधि

3. बैम्बू- प्रोमिशिंग गेन्स- खण्ड-II (हिन्दी व अंग्रेजी) 16 मिनट अवधि (1 मिनट- 35 सेकेन्ड) अवधि की एक टी. वी. स्पॉट फिल्म केवल अंग्रेजी में तैयार की गई।

4. स्टोरेज एण्ड सॉइंग ऑफ टिम्बर वीद स्पेशल रिफरेन्स टू यूकेलिप्टस

5. सीजनिंग ऑफ टिम्बर वीद स्पेशल रिफरेन्स टू यूकेलिप्टस

6. प्रीजरवेटिव ट्रीटमेन्ट ऑफ टिम्बर वीद स्पेशल रिफरेन्स टू यूकेलिप्टस

1998-99 के दौरान निम्न तीन फिल्मों पर काम जारी था :

1. ''पारंपरिक मछुवारों के लिए उपचारित कैटामरैन'' पर फिल्म

2. ''अकाष्ठ वन उत्पादों'' पर फिल्म

3. ''कैज्वारिना का आर्थिक उपयोग'' पर फिल्म

नयी फिल्म परियोजना :

वर्ष के दौरान निम्न चार नयी फिल्में बनाने का प्रस्ताव किया गया है :

1. शुष्क क्षेत्र में वर्षा जल संचयन

2. दबाव स्थलों के वनीकरण के लिए तकनीकें

3. क्लोनीय गुणन

4. हिमालयन परितंत्र

स्कूलों में वानिकी और पर्यावरण संबंधी विषयों को शामिल करने के दृष्टिकोण से पाठ्यक्रम तैयार करने हेतु परामर्शदाता नियुक्त करने के लिए कार्यवाई शुरू की गई।

पुस्तकों, विवरणिकाओं, पम्फलेटों आदि का प्रकाशन

विवरणिकाएं :

1. बैरन सोडिक क्लॉथ्ड ग्रीन

2. कम्पोजिट वुड

3. रिसर्च इन कैमिस्ट्री ऑफ फॉरेस्ट प्रोडक्ट

4. पल्प एण्ड पेपर टेक्नोलॉजी
5. डिप्टीरोकार्पस रीप्टिसस सीनों डी. मैक्रोकार्पा
6. इम्प्रूव्ड प्लांटिंग स्टॉक
7. पावलोनिया
8. आई०एफ०जी०टी०बी० एण्ड फिल्ड गाइड टू पनामपल्ली रिसर्च स्टेशन
9. आई०सी०एफ०आर०ई० ब्राशुअर्स अपडेटेड
10. पुनर्मुद्रण के लिए विभिन्न प्रजातियों के 15 ब्राशुअर्श की पाण्डुलिपि तैयार की गई।

पुस्तकें :

1. फारेस्ट्री स्टैटिस्टिक्स इंडिया -1996
2. फारेस्ट्री रिसर्च एक्सटेंशन स्ट्रेटीजी
3. इंडियन वुड्स वाल्यूम-1
4. अरबन फारेस्ट्री मैनुअल

बुलेटिन :

1. आई. एफ. एल. आई. एन., न्यूजलेटर
2. इनविंस न्यूजलेटर
3. टीम्बर/बैम्बू ट्रेड बुलेटिन

अन्य प्रकाशन :

1. भा०वा०अ० एवं शि०प० मुख्यालय, देहरादून में सम्पन्न ''नेशनल वर्कशाप ऑन लिंकेजेज बीटवीन फॉरेस्ट्री रिसर्च एण्ड फारेस्ट्री प्रैक्टिसेज'' प्रोसिडिंग।
2. भा०वा०अ० एवं शि०प० मुख्यालय, देहरादून में सम्पन्न ''पापुलेराइजिंग थीम ट्रीज एमोंग पीपुल इनक्लूडिंग रूरल एण्ड अरबन फॉरेस्ट इंडस्ट्रीज'', पर राष्ट्रीय सेमिनार की कार्यवाही।
3. लिस्ट आफ दी लिंकेजेज इस्टेबलिस्ड बाई. आई. डब्ल्यू. एस. टी., बंगलौर वीद वेरीयस आर्गेनाइजेशन।
4. न्यूजपेपर क्लीपिंग रिलेटेड टू मेराइन वर्क आफॅ बाई. आई. डब्ल्यू. एस. टी., बंगलौर।
5. प्रोसिर्डिंग आफॅ वर्कशाप आर्गेनाइज्ड बाई. आई. डब्ल्यू. एस. टी.।

राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र :

राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र का एक भण्डार गृह है। उपयोगकर्ताओं को ग्राहक सूचना उपलब्ध कराने के लिए इसे गतिशील सूचना केन्द्र में परिवर्तित किया जा रहा है।

राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र ने अपने ग्राहकों को सूचना सेवाएं देने और अभिलेखों के प्रक्रमण की आधुनिक विधियों/पद्धतियों का सूत्रपात किया है। व्यावसायिक कार्यकलाप, यथा-संग्रह निर्माण, ऑन लाइन पब्लिक एक्सेज कैटालॉग देने के लिए मशीन से पठनीय सूची का सृजन, अभिलेखों की बारकोडिग, अनुदर्शी खोज सेवा में सुधार, भा०वा० एवं शि०प० संस्थानों के साथ अभिलेखों का आदान-प्रदान, संचार सुविधाओं का सुधार, इन्टरनेट पहुंच उपलब्ध कराना, मानव संसाधन का विकास करना आदि राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र में कुछ उपभोक्तान्मुखी सुविधाएं हैं।

1998-99 वर्ष के दौरान, रूपया 55,78,192/- मूल्य की 2468 नयी पुस्तकें रा०व०पु० एवं सू०के० में जोड़ी गयी। 258 विदेशी जरनल और 130 भारतीय जरनल मंगाने के अलावा राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र को 250 से अधिक नि:शुल्क पत्रिकाएं प्राप्त हो रही हैं।

चालू वर्ष के दौरान स्टॉक में करीब 1500 किताबों को बारकोड किया गया।

प्रशिक्षण :

पुस्तकालय और सूचना विज्ञान से सम्बंधित सूचना प्रौद्योगिकियों में नवीनतम रूझानों के साथ बराबरी बनाए रखने के लिए फ्री परियोजना के तहत अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण की योजना बनाई गई। इसके अलावा, राष्ट्रीय स्तर पर भा०वा०अ० एवं शि०प० संस्थानों और राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र के पुस्तकालय कर्मचारियों के लिए इसी तरह के प्रशिक्षण की योजना बनाई गई।

नेटवर्क सेवाएं :

भा०वा०अ० एवं शि०प०/व०अ०सं० परिसर में नेटवर्किंग सेवाएं स्थापित हैं। वर्तमान में 100 नॉड्स परिसर के आर-पार हैं। निम्न नेटवर्क सेवाएं उपलब्ध हैं :-

1. इलेक्ट्रॉनिक मेल
2. सी डी रोम संदर्भिका आँकड़ा आधार में पहुंच (सात)
3. पुस्तकालय आंकड़ा आधार ऑन लाइन पब्लिक एक्सेस सूची (ओ. पी. ए. सी.) में पहुंच
4. इन्टरनेट

भा०वा०अ० एवं शि०प० ने वेब साइट शुरू किया है और यह http://www.icfre.up.nic.in में विश्व भर में देखा जा सकता है।

1. प्रलेख पोषण :

(i) सूत्रीपात का श्रेणीकरण

पारंपरिक और गैर-पारंपरिक साहित्य की श्रेणी के तहत प्राप्त करीब 200 अभिलेखों का वर्गीकरण पूरा किया गया। उक्त अभिलेखों के 3200 लेखकों, विषयों और प्रजाति कार्डो और 500 सन्दर्भ शीटों को तैयार किया गया। 14 नयी प्रजातियों और 8 नए विषयों की लेजर फाइलें खोली गई।

(ii) शिक्षा और प्रशिक्षण :

राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र में विद्यमान पारंपरिक और गैर-पारंपरिक सामग्रियों पर जागरूकता सृजित करने के लिए, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के अनुसंधान कर्मचारियों एवं संकाय सदस्यों के लिए ''तकनीकी लेखन के लिए सूचना संसाधन'' पर कई व्याख्यानों का आयोजन किया गया। इसके अलावा, वन अनुसंधान संस्थान, सम विश्वविद्यालय में अनुसंधान अध्येताओं के लिए ''अनुसंधान कार्यपद्धति'' पर एक 100 दिवसीय पाठयक्रम कार्य शामिल किया गया है। स्कॉलरों के लिए ''अनुसंधान कार्यपद्धति के लिए सूचना विज्ञान'' के अनुप्रयोग पर दो सप्ताह की सैद्धान्तिक और प्रायोगिक कक्षाएं चलाई गई।

(iii) वानिकी सूचना पर इनविस केन्द्र :

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के अधीन पर्यावरणीय सूचना प्रणालियों में वानिकी सूचना पर, एक केन्द्र है। प्रत्येक इनविस केन्द्र के लिए आवश्यक है कि वे अपने संस्थान के कार्यकलापों को दर्शाते हुए एक मोनोग्राफ प्रकाशित करें। आबंटित विषय पर भा०वा०अ० एवं शि०प० का मोनोग्राफ शीघ्र ज़ारी किया जाएगा।

2. ग्रे साहित्य :

ग्रे साहित्य एकत्र करने के लिए अब तक अठारह राज्य से ग्रे साहित्य परामर्शदाता नियुक्त किए गए हैं। इन परामर्शदाताओं के लिए अगस्त, दिसम्बर और जनवरी (1998-99) के दौरान तीन बैचों में पूर्वाभिमुखीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया गया।

राज्य परामर्शदाताओं से प्राप्त 4500 ग्रे साहित्य अभिलेखों में से इन परियोजना के अन्तर्गत वानिकी ग्रे साहित्य संग्रहण के लिए 2,000 को उपयुक्त पाया गया। अभिलेखों को ऑक्सफोर्ड वर्गीकरण की ऑक्सफोर्ड डेसिमल प्रणाली के अनुसार श्रेणीकृत किया गया। प्रत्येक अभिलेख के लिए प्रकाशन के स्थान निर्धारण हेतु पूर्ण संदर्भिका ब्योरों के साथ सूचनात्मक सार तैयार किए गए। इन शोध लेखो में दिए गए महत्वपूर्ण सिद्धान्तों पादप प्रजातियों, कार्यपद्धतियों एवं तकनीकों को उपयुक्त

कीवर्ड़ के साथ निर्दिष्ट किया गया है। तेज भण्डारण और पुनः प्राप्ति को सरल करने के इस सूचना को कम्प्यूटरीकृत किया जा रहा है।